PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

अगस्त 2008 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

क्या आप पाप के दास हैं या ईश्वर के सेवक?

15 अगस्त को सारी कलीसिया **माँ मरियम,** प्रभु येशु की माँ, **के स्वर्गोद्ग्रहण** (अर्थात् मरणोपरान्त शरीर के साथ स्वर्ग में आरोहित किया जाना) का पर्व मनाती है।

माँ मरियम का योगदान और प्रतिफल

माँ मरियम ने अपनी आज्ञाकारिता, विनम्रता, सहनशीलता, द ढ़ ईश्वरीय भक्ति व विश्वास के साथ निष्पाप जीवन बिताया और कुँवारी रहते हुए भी वह पवित्र आत्मा की शक्ति से सम्पन्न होकर इस संसार के मुक्तिदाता को नौ महीने अपने गर्भ में रख प्रथम पवित्र संस्कार की प्रकोषिका बनी। उन्होंने गौशाले में येशु को जन्म दिया, उनका पालन-पोषण किया, उन्हें अच्छे संस्कार दिये व संहिता का ज्ञान दिया, उन्हें पढ़ाया-लिखाया, उनके वचनों को स्वीकार कर व पालन कर उनकी प्रथम शिष्या बनी, उनके दुःखभोग में शामिल हुई व कलवरी की क्रूस यात्रा तय करने पर वह अपने पुत्र के क्रूस के साये में खड़ी रही। यही नहीं, प्रभु येशु के मरणोपरान्त सभी शिष्यों को उन्होंने प्रेम के सूत्र में बाँधे रखा, प्रार्थना में उनकी अगुवाई की, उन्हें ढ़ारस बँधाया व सान्त्वना दी, सभी प्रेरितों की रानी व कलीसिया की माँ बनी, और अन्त में ईश्वर की इच्छा को पूर्ण करते हुए उन्होंने इस धरती में अपना जीवन समाप्त किया। ईश्वर के मुक्ति-विधान में **स्वेच्छा से** शामिल होकर पवित्रता में रहते हुए जो माता मरियम ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया व हम सबके लिए जो आदर्श प्रस्तुत किया उसका प्रतिफल यथायोग्य उनकी आत्मा का शरीर के साथ स्वर्ग में उठा लिया जाना ही था। तत्पश्चात् उन्हें ईश्वर से स्वर्ग और प थ्वी की महारानी की उपाधि भी मिली। प्रभु येशु के बाद उनकी माँ ही पहली हैं जो स्वर्ग में शरीर के साथ आरोहित की गई और हमारे जीवन के लिए एक आदर्श, एक प्रेरणा और एक चुनौती छोड़ गई।

येशु द्वारा पाप की दासता से मुक्ति

इसी तरह यदि हम भी पवित्र जीवन व्यतीत कर ईश्वर के लिए स्वंय को एक सुग्राह्य बलि के रूप में चढ़ायें तो निश्चय ही हमें भी मरणोपरान्त ईश्वर से अनन्त जीवन का अमूल्य पुरस्कार मिलेगा। प्रभु हम सभी को **सन्त** बनने के लिए आमन्त्रित कर रहे हैं। पर हम सभी मनुष्य तो पापी हैं और हर दिन ईश्वर के नियमों को तोड़ते व उनके विरूद्ध पाप करते हैं। इस कारण हम ईश्वर की महिमा व कृपा से वंचित हैं और म त्यु के अधीन हैं क्योंकि **पाप की दासता का परिणाम म त्यु है, शरीर की अशुद्धता और अधर्म की अधीनता है।** तो, हमें इस पाप व बुराई की दासता से कौन मुक्ति दिलायेगा? **"इस म त्यु के अधीन रहने वाले शरीर से हमें कौन मुक्त करेगा? ईश्वर ही! हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा। इसलिए ईश्वर को लाखों बार धन्यवाद!"(रोमियों 7:24-25) प्रभु येशु पिता परमेश्वर के परमप्रिय इकलौते पुत्र व हमारे मुक्तिदाता हैं जो इस धरती पर मनुष्यों के उद्धार व कल्याण के लिए 2000 वर्ष पूर्व आये थे, हमारे लिए क्रूस पर मरे, तीसरे दिन जी उठे और आज अपने विश्वासियों के बीच जीवित हैं।** प्रभु येशु के मरण के द्वारा ही सम्पूर्ण मानवजाति पापों के दण्ड से मुक्त हुई और उनके जी उठने से (शरीर के साथ) स्वर्ग का द्वार मनुष्यों के लिए खुल गया। म त्यु पर विजय प्राप्त कर वह सदा के लिए अपने विश्वासियों के साथ संसार के अन्त तक जीवित

शेष भाग प ष्ठ 2 पर ★

'जीवन-धाम' की रानी को समर्पित एक गीत!

हे माँ, मेरी माँ, प्यारी माँ, ओ मेरी माँ (2)
Ch: तेरे द्वार पर आके विनती करूँ मैं
वरदायिनी हे माँ मरिया,
रहना तू मेरे संग सदा
जीवन की डगर में हे माँ

i) दुःखों के तलवार ने
तेरे दिल को भेदा है
प्रभु दासी बन मेरे लिए
सभी कष्टों को झेला है
प्रभु की सूली के पास खड़ी,
रोकर करे मेरे लिए विनती
मुझे ले चल प्रभु के समीप

ii) तू थाम ले हाथ मेरा,
भटका हुआ राही हूँ मैं
तन पीड़ित, मन व्याकुल है,
दे अपना सहारा तू मुझे
अँधियारे जग को दे अपनी ज्योति,
तू दिखा सही राह मुक्ति की
रक्षा कर सभी बच्चों की

iii) प्रभु का सुन्दर धाम है तू,
रानी जीवन-धाम की तू
जो कृपाँए कोई तुझसे माँगे,
प्रभु से वो दिलाती है तू
सबको तू समेटे अपने दिल में,
है बनी जग की जननी तू
स्वर्ग-धाम की रानी है तू

येशु ने कहा, "जो मेरा अनुसरण करना चाहता है, वह आत्मत्याग करे और अपना क्रूस उठा कर मेरे पीछे हो ले...क्योंकि जो मेरे कारण अपना जीवन खो देता है, वह उसे सुरक्षित रखेगा।"(सन्त मत्ती 16:24-25)

प ष्ठ 1 का शेष भाग ★

रहेंगे **(मत्ती 28:20)** तथा उनके लिए सदा पिता से मध्यस्थ करने वाले महापुरोहित भी बने रहेंगे **(इब्रानियों 7:24-25)।**

मनुष्य को शान्ति, त प्ति, सांसारिक इच्छाओं व पापों से मुक्ति केवल प्रभु येशु ही दे सकते हैं क्योंकि पिता परमेश्वर ने सारा अधिकार अपने पुत्र को दे दिया है। वही पाप और म त्यु पर विजयी हुए और वह अब यह चाहते हैं कि सभी अन्त में पाप व म त्यु पर विजयी प्राप्त कर लें जिससे उनकी विजय पूर्णता तक पहुँच जाये। प्रभु येशु कहते हैं, **"जो पाप करता है, वह पाप का दास है। दास सदा घर में नहीं रहता, पुत्र सदा रहता है। इसलिए यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र बना देगा, तो तुम सचमुच स्वतन्त्र होगे" (योहन 8:34-36)।** अर्थात् हमें **सच्ची स्वतन्त्रता** प्रभु येशु ही, ईश्वर के पुत्र होने के नाते, प्रदान कर सकते हैं।

सच्ची व परिपूर्ण स्वतन्त्रता

यह स्वतन्त्रता हमारे देश की स्वतन्त्रता-जैसी नहीं है, जिसमें मनुष्य विदेशियों के अधीनता से तो मुक्त है पर अपनी ही वासनाओं, इच्छाओं, आदतों व पाप का गुलाम है। यह स्वतन्त्रता मनुष्य को सच्चाई, भलाई, प्रेम, एकाग्रता, अनुशासन, पवित्रता व परिपूर्णता की ओर अग्रसर करती है। यह उसे शुद्ध अन्तःकरण बनाये रखते हुए आगे बढ़ने में मार्गदर्शन देती है। यह उसे ईश्वर के कृपापात्र बना देती है और हर पल उसे स्तुतिगान व धन्यवाद ज्ञापन बिना किसी बाधा या संकोच के करने देती है क्योंकि उसे केवल ईश्वर की अधीनता ही स्वीकार्य है। यह मनुष्य को अपने भावनाओं, इच्छाओं, विचारों व अपनी इन्द्रियों पर काबू पाना सिखाती व उनकी अधीनता से उसे मुक्त कर देती है। वह उसे चिन्तामुक्त व दोषमुक्त रख हर पल सन्तुष्टि व आनन्द प्रदान करती है। वह उसे आशावादी व सकारात्मक द ष्टिकोण रखने वाला धर्मी व्यक्ति बनाती है। ऐसी आध्यात्मिक स्वतन्त्रता की ही हम सभी को ज़रूरत है जो हमें केवल **प्रभु येशु** से ही प्राप्त हो सकती है।

इस 15 अगस्त को हमने अपने देश की स्वतन्त्रता की **61वीं वर्षगांठ** मनाई थी। पर हम ज़रा सोचें की क्या हमारा देश वास्तव में इतने वर्षों बाद भी स्वतन्त्र है? नहीं, क्योंकि हम अपने चारों ओर बढ़ती गरीबी, भुखमरी, लाचारी, बेरोज़गारी, बीमारी, लूटपाट, अत्याचार, भ्रष्टाचार, हिंसा, अन्याय व हर तरह की बुराई देख व सुन रहे हैं– अपने पड़ोस में, बाज़ारों में, अपने समाज में, प्रदेश में, अखबार व टी०वी० में। जहाँ-तहाँ धर्म के नाम पर, जाति, शिक्षा, राज्य, विभिन्न अधिकारों के नाम पर, आरक्षण, सम्मान, धन-सम्पत्ति, सुख-सुविधाओं इत्यादि के नाम पर वाद-विवाद या लड़ाई-झगडे हर रोज़ हो रहे हैं। क्या इन सब से यह साबित नहीं होता कि हमारा देश स्वतन्त्र नहीं, बल्कि अब भी बुराई की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है और पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए निस्सहाय कराह रहा है। हमें यदि ऊपर उठना है तो सिर्फ **भौतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक, राजनैतिक या धार्मिक** स्वतन्त्रता ही हमारे लिए काफी नहीं होगी, पर हमें ज़रूरत है **आध्यात्मिक** स्वतन्त्रता की भी। इसलिए जब तक आप और मैं **आध्यात्मिक** रूप से स्वतन्त्र नहीं हो जाते और इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ते, यह देश कदापि स्वतन्त्र नहीं हो पायेगा और हमारा जीवन प्रतिदिन बदतर से बदतर होता जायेगा। इस स्वतन्त्रता को एक चुनौती के रूप में देखकर इसे प्राप्त करने के लिए हमें एक-दूसरे का सहयोग देना है, सत्य को अपनाना है, आपसी भाईचारा व अटूट प्रेम हर कीमत पर बनाये रखना है, और अपने अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या इत्यादि प्राकृत दुर्गुणों को त्याग देना है। तब हम ईश्वर के प्रिय पुत्र-पुत्रियाँ बन जायेंगे, उसके शान्ति, प्रेम, न्याय व धार्मिकता के राज्य के अधिकारी बन जायेंगे।

यदि हम अपनी इच्छाओं के दास बन जायेंगे, तो हम ईश्वर के पुत्र-पुत्री कहलाने योग्य नहीं रहेंगे और हम ईश्वर के घर में प्रवेश नहीं पा सकेंगे, अर्थात् हम स्वर्गराज्य से वंचित हो जायेंगे। पर प्रभु येशु की शिक्षा व आज्ञाओं का पालन सम्पूर्ण मानवजाति को सत्य की ओर ले जायेगी जिससे सभी पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकेंगे। **(योहन 8:31-32) ईश्वर की दासता का परिणाम जीवन, धार्मिकता और पवित्रता है।** मनुष्य, जो आज डर व आतंक का शिकार बन चुका है, भी प्रभु येशु की कृपा से, हर प्रकार के डर से मुक्त हो सकता है– **अन्धकार से डर, पैशाचिक शक्ति से डर, परीक्षा से डर, लोगों से डर, खतरों से डर, चोरों से डर, युद्ध से डर, महामारी और बीमारी से डर, प्राकृतिक विपदा से डर, म त्यु से डर, अपमान व अत्याचार से डर, अकेलेपन से डर** इत्यादि। संक्षिप्त में, प्रभु येशु ने हमारे जीवन को स्वतन्त्र व परिपूर्ण बनाने के लिए ही अपने जीवन का स्वेच्छा से अर्पण किया है– **"मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन प्राप्त करें- बल्कि परिपूर्ण जीवन प्राप्ति करें"(योहन 10:10),** और वह यही चाहते हैं कि हम में से हर एक परिपूर्ण, पवित्र व स्वतन्त्र बन कर, सभी चिन्ताओं, व्याकुलताओं व बाधाओं से मुक्त होकर, सन्तों की सहभागिता को, ईश्वरीय महिमा को प्राप्त कर लें। सन्त पौलुस तभी लिखते हैं, "मसीह ने स्वतन्त्र बने रहने के लिए हमें स्वतन्त्र बनाया, इसलिए आप लोग द ढ़ रहें और फिर दासता के जुए में न जुतें।" **(गलातियों 5:1)** हम पाप व सांसारिक इच्छाओं की अधीनता से मुक्त हो कर ईश्वर की अधीनता स्वीकार करें, उसके पवित्र आत्मा द्वारा सचालित हों, जिसमें सच्ची स्वतन्त्रता है, जिससे हम ईश्वर की सन्तान बन जाते हैं **(रोमियों 8:14)** जो हमें ईश्वर के प्रति, अपने प्रति व दूसरों के प्रति सच्चा व विश्वस्त बनाये रखता और हमारा मार्गदर्शन व सहायता करता है। **"प्रभु तो आत्मा है और जहाँ प्रभु का आत्मा है, वहाँ स्वतन्त्रता है।"** (2 कुरिन्थियों 3:17)

इसलिए आप अपने अंगो को धार्मिकता का साधन बनने के लिए ईश्वर को सौंप दें यह समझकर कि आप म तकों में से पुनर्जीवित हो चुके हैं। आप लोगों पर पाप का कोई अधिकार नहीं रहेगा। अब आप **संहिता** के नहीं, बल्कि **अनुग्रह** (ईश्वर की कृपा **येशु मसीह**) के अधीन हैं जिससे हमें अनन्त जीवन मिले। **(रोमियों 6)** हम प्रभु येशु से सच्ची स्वतन्त्रता प्राप्त करें, जिसमें न कोई भय है, न दण्ड की आशा है, न शंका है और न ही कोई धोखा, झूठ या बुराई। जिस प्रकार प्रभु येशु पाप का हिसाब चुकाने के लिए एक बार मर गये और अब ईश्वर के लिए जीते हैं, उसी प्रकार आप लोग भी अपने को ऐसा ही समझें–पाप के लिए मरा हुआ और येशु मसीह के लिए जीवित।

संपादकीय..

प्रिय पाठकगण मित्रों,

सन् 1996 में 15 अगस्त के दिन माँ मरियम के स्वर्गोद्ग्रहण के पर्व के अवसर पर **"दिव्य-ज्योति"** का सर्वप्रथम हिन्दी संस्करण प्रकाशित किया गया था। **जीवन-धाम** के इस मासिक पत्रिका के माध्यम से इन **12** सालों में लाखों लोगों तक ईश्वर के पवित्र वचन व अनेक अद्भुत चमत्कारों व साक्ष्यों के उल्लेख पहुँच चुके हैं। इससे हज़ारों की ईश्वरीय ज्ञान में व द्धि हुई है, ईश्वर में विश्वास सुद ढ़ हुआ है, चंगाई व शान्ति प्राप्त की है, जीवन-धाम की रोग-चंगाई प्रार्थना सभा के विषय में जान गये व हमारे संपर्क में रहे हैं।

और इस कार्य को सार्थक करने के

शेष भाग प ष्ठ 3 पर ★

प्रभु कहता है - मैं स्वंय अपनी भेड़ें चराऊँगा और उन्हें विश्राम करने की जगह दिखाऊँगा। जो भेड़ें खो गई हैं, मैं उन्हें खोज निकालूँगा; जो भटक गई हैं, मैं उन्हें लौटा लाऊँगा; जो घायल हो गई हैं, उनके घावों पर पट्टी बाँधूँगा; जो बीमार हैं, मैं उन्हें चंगा करूँगा; जो मोटी और भली-चंगी हैं, उनकी देखरेख करूँगा। मैं उनका सच्चा चरवाहा होऊँगा।"(एज़ेकिएल 34:15-16)

पृष्ठ 2 का शेष भाग ★

लिए इन वर्षों में कई लोगों ने अपना-अपना अमूल्य योगदान दिया है (इसके प्रकाशन में, इसके हाथों-हाथ या डाक द्वारा अन्य लोगों तक पहुँचाने में) व आर्थिक और आध्यात्मिक सहयोग दिया है, जिसके प्रति हम उनके आभारी हैं। हम भविष्य में भी आप सभी के भरपूर सहयोग की आशा रखते हैं और ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि आप सभी को भरपूर आशीष मिले व आपकी सब मनोकामनाँए पूरी हों।

"दिव्य–ज्योति"**(हिन्दी एवं अंग्रेजी में)**, जिसे हर महीने डाक द्वारा भारत के विभिन्न प्रदेशों में भेजी जाती है तथा जो दिल्ली महाधर्मप्रान्त की मासिक पत्रिका के साथ सभी गिरिजाघरों में हाथों-हाथ पहुँचाई जाती है, इन वर्षों में कुछ बदलाव से गुज़रा है और आप सब की बदौलत प्रसिद्धि की सीढ़ी चढ़ता जा रहा है। प्रभु को बारम्बार धन्यवाद! प्रभु की कृपा से पिछले क्रिसमस पर पहली बार हिन्दी "दिव्य-ज्योति" का **रंगीन संस्करण** प्रकाशित किया गया, जिसे देखकर सभी विश्वासियों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

सभी इन्टरनेट का इस्तेमाल करने वाले कृपया ध्यान दें : आप के लिए "दिव्य-ज्योति" **(हिन्दी एवं अंग्रेजी में)** के सभी संस्करण ऑनलाईन पढ़ने, डाऊनलोड करने व छापने के लिए हमारे वेबसाइट के इस पेज पर उपलब्ध हैं :

http://www.jeevandham.org/divyajyoti3.htm

हमारे प्रभु येशु मसीह की कृपा आप लोगों पर बनी रहे! — **एन्थोनी**

इस माह एक विशेष अनुरोध- आप सभी इन उद्देश्यों के लिए प्रार्थना करें

इस महीने कोसी नदी के कारण **बिहार व उत्तर प्रदेश** के कुछ प्रान्त भयंकर बाढ़ की चपेट में आ गये और हजारों घर पूरी तरह तबाह हो गये। हमारे हज़ारों भाई-बहन बेघर हो गये व भूख से पीड़ित हैं, अनेक अभी भी कहीं न कहीं फँसे हुए हैं, और अनेक म त्यु के शिकार हो गए जिसमें छोटे बच्चे, गरीब महिलाँए व बुजुर्ग और निस्सहाय स्त्री-पुरुष शामिल हैं। साथ ही हम **उडीसा** प्रदेश के लिए प्रार्थना करें जहाँ पर धर्म व जाति के नाम पर दंगे-फसाद हो रहे हैं, हमारे कई भाई-बहनों व धर्मसेवकों पर अन्याय व अत्याचार किया जा रहा है, उनके घरों को नष्ट किया जा रहा है व कई मासूमों की हत्या की जा रही है।

हम ईश्वर से इन सभी के लिए यह प्रार्थना करें कि उनकी सब ज़रूरतें समय पर पूरी हो जायें, सभी धार्मिक सद्भावना एवं शान्ति में जीवन बितायें, देश में भ्रष्टाचार, भेदभाव व गरीबी समाप्त हो, और सभी ईश्वरीय प्रेम व पडोसी प्रेम में पूर्णता तक पहुँचें। ◉

जीवित परमेश्वर के अद्भुत साक्ष्य- जीवन-धाम से

प्रभु येशु ने मेरे बचपन से (40 साल से)बहते कान को चंगा कर दिया!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा!

मेरा नाम जानकी देवी है और मेरी उम्र लगभग 40 वर्ष की हो गई है। बचपन से ही, अर्थात् करीब 40 वर्ष से, मेरा एक कान बहता था और पीप निकलती थी। और मेरे दूसरे कान में भी सुनाई बहुत कम देता था तथा सूजा रहता था। ठीक न होने के विश्वास से मैंने अपने कान को किसी डॉक्टर को भी नहीं दिखाया। लेकिन मैं पिछले 3 सालों से यहाँ जीवन-धाम में इतवार की प्रार्थना में शामिल हो रही हूँ। पहले इतवार से ही मुझे कानों में आराम मिलने लगा। और छह महीने से प्रभु येशु की दया से मेरा कान बिल्कुल ठीक है– न तो दर्द है, न तो पीप आती है और न तो सुनाई में कोई कमज़ोरी है।

***जानकी देवी**, फरीदाबाद.*

"तूने न तो यज्ञ चाहा और न चढ़ावा, बल्कि तूने मुझे सुनने के कान दिये।" *(स्तोत्र 40:7)*

दयासागर प्रभु ने मेरे 15 साल पुरानी बीमारी से मुझे छुटकारा दिलाया!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा!

मैं, मुन्नी (उम्र–35 वर्ष), पिछले 15 सालों से असहनीय सिर दर्द से पीड़ित थी। और पिछले 1 साल से मेरी एक नाक भी बिल्कुल बन्द हो गई थी जिससे मुझे साँस लेने में बहुत मुश्किल होती थी। मैं रोज़ सिर दर्द के लिए गोली लेती थी जिसके बगैर मेरा दर्द, चाहे कुछ देर के लिए ही सही, कम होने का नाम ही नहीं लेता था। फिर भी मैं हर समय रोती रहती थी और कोई काम नहीं कर पाती थी। मैं बस अपना सिर पकड कर बैठी रहती थी। दवा पर अब तक मैंने 20 हज़ार रूपये से भी अधिक खर्च कर डाले, पर दर्द से कोई डॉक्टर छुटकारा न दिला सका। किसी डॉक्टर ने कैन्सर और किसी ने दिमाग में ट्यूमर बताया। इस कारण मैंने 3 महीने पहले अरूणा असफ अली अस्पताल में ऑपरेशन भी करवाया। लेकिन फिर भी दर्द नहीं खत्म हुआ।

मेरे मुँह से भी कभी खून आता था और मेरी नाक बहती रहती थी।

ऐसे में मेरी एक सहेली ने मुझे जीवन–धाम की रोग-चंगाई प्रार्थना के विषय में बताकर मेरे अन्दर ठीक होने का विश्वास जगा दिया। वह मुझे 4 हफ्ते पहले यहाँ जीवन-धाम में इतवार को अपने साथ प्रार्थना में ले आई। मैंने प्रभु येशु से विश्वास के साथ अपनी चंगाई के लिए प्रार्थना की। पहले इतवार में ही मेरे सिर दर्द में आराम आ गया। और मेरे लिए चमत्कार की बात यह है कि पन्द्रह दिन से मेरा सिर दर्द बिल्कुल गायब ही हो गया है। मैं अब चैन से साँस ले सकती हूँ और घर के सारे काम भी कर लेती हूँ। इस कृपा के लिए प्रभु का लाखों बार धन्यवाद!

***मुन्नी**, फरीदाबाद.*

"उसने अपनी वाणी भेजकर उन्हें स्वस्थ किया... वे प्रभु को धन्यवाद दें - उसके प्रेम के लिए और मनुष्यों के कल्याणार्थ उसके चमत्कारों के लिए।" *(स्तोत्र 107:20-21)*

शादी के 12 साल बाद प्रभु ने हमें सन्तान का दान दिया!

प्रभु येशु की स्तुति हो ! प्रभु येशु को धन्यवाद!

मैं, कन्चन (उम्र–32 वर्ष), यहाँ "जीवन–धाम" की प्रार्थना सभा में पहली बार 3 साल पहले आई थी। आने का कारण यह था कि मेरी शादी के नौ साल बाद भी मुझे संतान की प्राप्ति नहीं हुई थी। मेरे पति बच्चू भी इसलिए बहुत

प्रभु येशु ने कहा, "यदि तुम में हर एक अपने भाई को पूरे हृदय से क्षमा नहीं करेगा, तो मेरा स्वर्गिक पिता भी तुम्हारे साथ ऐसा ही करेगा।" (सन्त मत्ती 18:35)

दुःखी एवं परेशान थे। मेरा इलाज करवाया गया पर इलाज से कोई फायदा नहीं हुआ। इस तरह एक संतान मिलने की हमारी आशा भी डूब गई।

तब मेरे पति के एक मित्र ने उन्हें "जीवन-धाम" के विषय में बताया और तब से हम यहाँ आने लगे। प्रभु ने हमारी प्रार्थना आखिरकार सुन ही ली। मुझे गर्भ ठहर गया और छह महीने पहले हमारे परिवार में प्रभु की क पा से एक लडकी का जन्म हुआ। आज मैं अपनी लडकी के साथ जीवन-धाम में इस अमूल्य वरदान की गवाही देने व ईश्वर को धन्यवाद देने आई हूँ। यह हमारे लिए बड़ी खुशी की बात है कि प्रभु की दया से उसे एक सुन्दर नाम मिला है – **रोशनी**। आल्लेलूया!

कन्चन, बच्चू- फरीदाबाद

"प्रभु वन्ध्या को आनन्द प्रदान कर उसे पुत्रवती माता के रुप में घर में बसाता है।"

मिस्सा बलिदान का समय:

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में

हर इतवार - शाम 6:30 बजे

प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। मंगलवार को मिस्सा प्रातः 6:30 बजे चढ़ाया जाता है। पिछले 5 सालों से लगातार 24 घण्टों की पवित्र आराधना यहाँ चलती आ रही है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

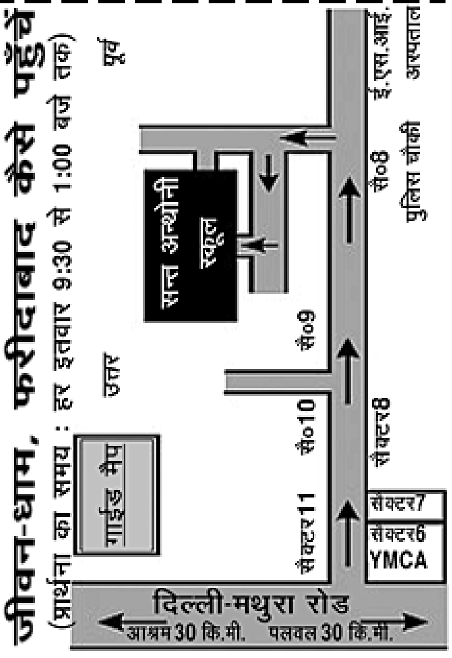

दानशील एवं उदार बनो?

"हाथ बढ़ा कर दरिद्र को दान दो, जिससे तुम्हें आशीर्वाद प्राप्त हो। सब जीवितों के प्रति उदार बनो, म तकों को अपने दान से वंचित मत करो। रोने वालों को सान्त्वना दो और शोक मनाने वालों के साथ शोक मनाओ। बीमारों से मिलने में लापरवाही मत करो। इससे तुम लोकप्रिय बनोगे। सब बातों में अपनी अन्तगति याद रखो और तुम जीवन भर पाप नहीं करोगे।"

"मनुष्य का भिक्षादान मुहर की तरह उसकी रक्षा करता है। प्रभु मनुष्य का परोपकार आँख की पुतली की तरह सुरक्षित रखता है। वह अन्त में उठकर उन्हें प्रतिफल प्रदान करेगा।"

(प्रवक्ता-ग्रन्थ 7:36-40; 17:18-19)

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

9) रोमियों के नाम पत्र
c) अध्याय 7-9

आपको इस पत्र के इन तीन अध्यायों **(अध्याय 7-9)** से लिये गये निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरने हैं तथा उत्तर में उनकी वाक्यांश संख्या भी अध्याय सहित बतलानी है।

1) _____ने उन्हें_____लिया था। उन्हें_____के _______की_____, विधान, _____, उपासना तथा_______मिली हैं।

2) इस_____ के_______रहने वाले_____ से _____कौन_______ करेगा?

3) कौन ____को_____के_____से_____कर सकता है? क्या_____या_____? क्या_________, भूख, __________, जोखिम या ______?

4) यदि____अपने_____के ______–काल में किसी ______की_____बन जाती है, तो वह __________कहलायेगी।

5) उसने______पहले से ______किया, उन्हें _____भी है; जिन्हें________, उन्हें______से मुक्त भी किया है और ______पाप से _____किया, उन्हें__________भी किया है।

6) _________इस्राएल के_____में_____कर कहते हैं, "__________की संख्या_____ के __________के सद श क्यों न हो, फिर भी_____में ________ मात्र_____पायेगा।

7) क्योंकि_____के विधान ने, जो_____मसीह द्वारा _____प्रदान करता है, _____को _____ तथा_____ की_________से_____कर दिया है।

8) इस_______हम देखते हैं कि______पवित्र है और_____पवित्र, ______एवं________।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

9) रोमियों के नाम पत्र
b) अध्याय 4-6

1) पाप, म त्यु, वरदान, येशु, जीवन।(6:23)
2) संहिता, अधीन, उत्तराधिकारी, विश्वास, प्रतिज्ञा।(4:14)
3) मनुष्य, अपराध, फलस्वरूप, दण्डाज्ञा, मनुष्य, प्रायश्चित, फलस्वरूप, पापमुक्ति। (5:18)
4) दासता, पाप, परिणाम, ईश्वर, आज्ञापालन, परिणाम।(6:16)
5) दुःख-तकलीफ, गौरव, धैर्य, द ढ़ता, द ढ़ता, आशा।(5:3-4)
6) कर्म, मज़दूरी, अधिकार।(4:4)
7) शत्रु, ईश्वर, पुत्र, म त्यु, मेल, पुत्र, जीवन, उद्धार।(5:10)
8) आप, जानते, मसीह, बपतिस्मा, मिला, म त्यु, बपतिस्मा।(6:3)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

ङ) सही उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दुःखी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"प्रभु तुम्हारी कीर्ति सदा बनाये रखे और तुम्हें आशीर्वाद प्रदान करता रहे; क्योंकि अपनी जाति की दुर्गति देखकर तुमने अपने प्राणों की चिन्ता नहीं की, बल्कि तुम हमारी विपत्ति दूर करने के लिए हमारे ईश्वर द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर निस्संकोच आगे बढ़ी।"(यूदीत 13:20)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.